**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा हिंदी साहित्य में युग प्रवर्तक

Junti Duarah, Research Scholar, Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh

Dr. Govind Dwivedi, Professor, Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh

## सार

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य साहित्य की शुरुआत सन् 1860 के आस–पास चार विद्वानों– मुंशी सदासुखलाल, ईशाल्लाह खां, लल्लू लाल और सदाल मिश्रा की कृतियों से हुई। लेकिन उन्होंने केवल गद्य के नमूने प्रस्तुत किए, उनमें से किसी को भी भविष्य में गद्य साहित्य के लिए कोई आदर्श स्थापित करने या निर्देशित करने की प्रसिद्धि नहीं मिली। यह प्रसिद्धि या श्रेय भारतेंदु जी को 70–72 वर्षों के बाद आधुनिक गद्य भाषा के संस्थापक और साहित्य के प्रवर्तक के रूप में मिला।

हरिश्चंद्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर गहरा था। जिस प्रकार उन्होंने गद्य की भाषा को परिष्कृत कर उसे अत्यंत मार्मिक मधुर और स्वच्छ रूप प्रदान किया, उसी प्रकार उन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नए पथ पर अग्रसर किया। उनकी भाषा संस्कृति के महत्व को सभी ने स्वतंत्र रूप से स्वीकार किया और उन्हें वर्तमान हिंदी गद्य का प्रवर्तक माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र को न केवल हिन्दी गद्य का जनक कहा जाता है बल्कि आधुनिक काल का भी पिता कहा जाता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेन्दु जी ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक एवं युगान्तरकारी परिवर्तन किये तथा हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी। हिन्दी साहित्य में नवयुग के प्रवर्तक भारतेन्दु जी का उदय निश्चय ही उस पूर्णिमा के समान हुआ है, जिसकी शांत, शीतल, दीप्तिमान आभा दिग्वधु को आलोकित करती है। निश्चय ही उनका शीर्षक भारतेंदु–युग प्रवरवातक सार्थक और सटीक है।

***मुख्य शब्दः*** *साहित्य, शीतल, संस्कृति।*

## 1. प्रस्तावना

भारतेन्दु ने न केवल नई विधाओं की रचना की, बल्कि साहित्य की विषय–वस्तु में भी नवीनता लाई, इसलिए उन्हें भारत में पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है, उनसे पहले हिंदी साहित्य में मध्यकालीन रुझान मौजूद थे। इसलिए उनके सामने का साहित्य सांसारिक जरूरतों से पूरी तरह कटा हुआ था।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साहित्य का पूरा वातावरण प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिकता का था, उन्होंने अपने प्रयासों से हिंदी साहित्य को देश की मिश्रित संस्कृति के गुणों के साथ–साथ पश्चिम की भौतिक और वैज्ञानिक सोच से लैस करने का भरसक प्रयास किया।

भारतेन्दु युग या पुनर्जागरण–युग हिन्दी–कविता के लिए एक नई जागृति के संदेशवाहक युग के रूप में उभरा, लेकिन इसके सीमांकन को लेकर विद्वानों में मतभेद है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतेंदु हरिचंद्र (1850–1885) के निर्माण काल को ध्यान में रखते हुए 1925 से 1950 के काल को नई धारा या प्रथम उत्थान बताया है और इस काल को भारतेंदु हरिश्चंद्र के कार्यों से समृद्ध माना है। उनके सह–लेखक। लेकिन कुछ अन्य लेखकों को उनके द्वारा निर्धारित अवधि से असंतोष है। 1926–1957 तक मित्रबंधु, 1927/1957 तक डॉ. रामकुमार वर्मा, 1922–1957 तक डॉ. केसरी नारायण शुक्ल और 1925–1957 तक डॉ0 रामविलास शर्मा ने भारतेंदु युग की व्यापकता पर विचार किया है। उल्लेखनीय है कि भारतेंदु द्वारा संपादित मासिक पत्रिका 'विवचन सुधा' का प्रकाशन 1868 ई. इसलिए 1868 ई. (1925 ई.) से भारतेंदु युग के उदय पर विचार करना उचित होगा। इसके तर्क के आधार पर 'सरस्वती' (1900 ई.) के प्रकाशन का वर्ष भारतेंदु युग के अंत का सूचक माना जा सकता है।

## 2. भारतेन्दु – युग का नवीन परिवेश

महत्वपूर्ण युग में जन चेतना पुनर्जागरण की भावना से प्रेरित थी। परिणामस्वरूप, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में न केवल अतिरिक्त गतिविधियाँ हुईं, बल्कि इन सभी में एक गहरा अंतर्संबंध था। भारतेंदु युग के कवि–कर्तव्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। यह विषय चयन की चौड़ाई और विविधता में परिणत हुआ। सजावटी–मोह, प्रथा–प्रतिनिधित्व या प्रकृति का उत्तेजक चित्रण, प्रभुति औपचारिक प्रवृत्तियों का महत्व धीरे–धीरे कम हो गया और भक्ति और नीति को प्रमुख चिंताओं के रूप में अपनाने का कोई आवेग नहीं था। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जनता को मुक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से जातीय संगीत की शैली, यानी लोक गीतों पर सामाजिक कविताओं के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया।

मातृभूमि–प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार, गोरक्षा, बाल–विवाह–निषेध, शिक्षा का मूल्य, शराब–निषेध, भ्रूणहत्या की निंदा, आदि जैसे अधिक से अधिक मुद्दों को अपनाने में कवियों की रुचि थी। आत्मा भी इस युग का एक विशेष तत्व है। ब्रशीमाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सिद्धांतों और थियोसोफिकल सोसायटी के आदर्शों का भी सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव पड़ रहा था। आर्थिक, औद्योगिक और धार्मिक क्षेत्रों में पुनरुद्धार की प्रक्रिया चल रही थी।

भारतेंदु जी ने गीतात्मक भाषा को भी बढ़ाया। उन्होंने उन प्राचीन शब्दों को हटा दिया जो अभ्यास में उपयोग नहीं किए जाते थे जैसे चक्कावई, धाये, दीह, उनो, लोम आदि, जिसके कारण सामान्य आबादी काव्य में रुचि नहीं थी। साथ ही शब्दों को घुमा देने का दोष भी मिट गया। चलती–फिरती कविताओं की परम्परागत परंपरा के स्थान पर उन्होंने गतिशील व्यवहार की भाषा में अपनी स्वादिष्ट कविता और हिन्दी कविता के प्रति दृष्टिकोण का योगदान दिया। इस वजह से, उनकी रचना अपने पूरे समय में अत्यधिक लोकप्रिय हुई।

उनके समय में हिंदी नई विचारधारा से कोसों दूर थी। साहित्य लोगों की रुचि के साथ नहीं बदला। पढ़े–लिखे लोग खुद आगे बढ़े हैं फिर भी साहित्य को आगे नहीं बढ़ा सके। साहित्य और दर्शन के क्षेत्र और कार्य क्षेत्र को स्वतंत्र रूप से नहीं चलना चाहिए और साथ–साथ चलना चाहिए, तभी देश की प्रगति होती है। इसके दो कारण थे, एक, आधुनिक शिक्षा से प्रेरित होकर लोगों ने देश की गति को पकड़ लिया, लेकिन उर्दू के केंद्र में पड़ने के कारण वे हिंदी से विभाजित हो गए, जिसमें वे अपने विचारों से अलग हो गए। विचारों की प्रेरणा, जागृति और उत्साह रखने वाले अन्य लोगों ने हिंदी के दायरे को नई अवधारणाओं को लाने के लिए सीमित माना। ऐसे समय में इन बाधाओं को दूर करने के लिए एक संतुलित, साहसी, प्रतिभाशाली व्यक्ति की आवश्यकता थी। भारतेंदु जी ने इस कठिन कर्तव्य को संभाला।

**काव्यधारा :–**

भारतेंदु युग के कवियों की काव्य श्रृंखला अत्यंत व्यापक और विविध है। एक ओर उनकी रचनात्मकता–प्रवृत्तियों का संबंध भक्तिकाल और रीतिकाल से है, वहीं दूसरी ओर वर्तमान पर्यावरण की स्थिति के ज्ञान की भी कमी नहीं है। प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने के लिए, निम्नलिखित श्रेणियों के तहत उनकी जिम्मेदारियों को वर्गीकृत करना उचित होगारू राष्ट्रवाद, सामाजिक चेतना, भक्ति भावना, सौंदर्य, प्रकृति चित्रण, हास्य–व्यंग्य, पारंपरिक प्रतिनिधित्व, समस्या समाधान, काव्य अनुवाद और कला।

**राष्ट्रीयता :–**

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय वीरों में प्रताप, छत्रासाल शिवाजी आदि ने क्षेत्र विशेष ;चितौड़, बुंदेलखंड और महाराष्ट्र की रक्षा के लिए जिस तत्परता और वीरता का परिचय दिया था उसका स्तवन करने वाले भूषण प्रभृति कवि क्षेत्रीय भावना अर्थात संकीर्ण राष्ट्रीयता से उपर नहीं उठ सके थे।

भारतेन्दु युगीन कवियों में भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिलायी , पर उनकी राष्ट्रीय भावना केवल यही तक सीमित नहीं रहीं। अंग्रेजों की विचारधारा और उनकी देशभक्ति कविताओं से भी उन्होंने यथेष्ठ प्रेरणा ली,जिसका फल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से उपर उठकर वे संपूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। हमारे उत्तम भारत देश राधाचरण गोस्वामीद्ध और धन्य भूमि भारत सब रतननि का उपजावनि ( प्रेमधन )आदि काव्य पंक्तियों इसी तथ्य को प्रकट करती है।

भारतेंदु की विजमिनी,विजय,वैजंती प्रेमधन की आनंद अरूणोदय, प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' और नयासवंत तथा राधाकृष्ण दास की 'भारत बारहमासा' और 'विनय' शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है। इस संदर्भ में उन्होने अपने प्रतिपाद्य को कहीं व्यंयोक्तियों के माध्यम से प्रकट किया है तो कहीं अतीत के प्रेरणादायी प्रसंगों की चर्चा द्वारा नवयुवकों को पुनर्जागरण का मंत्रा दिया है। अंग्रेजी शोषण – नीति का भारतेन्दु द्वारा प्रत्यक्ष उल्लेख इस भावना की चरम परिणति हैः –

भीतर – भीतर सब रस चूसैं ,हँसि–हँसि के तन–मन धन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेज ,क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज।।

प्रेमधन ने 'हार्दिक हर्षादेर्श 'कवित में इस स्वार्थपूर्ण शासन प्रक्रिया के लिए भी ईस्ट इंडिया कंपनी को दोषी ठहराया है ,अन्यथा उससे शासनाधिकार लेने वाली रानी विक्टोरिया के विषय में तो उन्होंने यह मत व्यक्त किया है–किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन। वास्तव में भारतेन्दु युग की राष्ट्रीयता चिंतनधारा दो पक्ष है –देशप्रेम और राजभक्ति। प्रथम पक्ष के अंतर्गत उन्होंने हिन्दी–हिंदु–हिंदुस्तान का गुणगान किया।

**' चहहु जु सांचहु निज कल्यान , तौ सब मिलि भारत सन्तान।**
**जपो निरन्तर एक जवान , हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।"**

प्रतापनारायण मिश्र।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

**सामाजिक चेतना :–**

भारतेंदु युग की मुख्य विशेषता यह है कि कवियों ने समाजिक जीवन की उपेक्षा न कर जनता की समस्याओं के निरूपण की ओर पहली बार व्यापक रूप में ध्यान दिया। इसके पूर्व रीतिकाल में राजाओं और सामंतो के आश्रय में लिखित दरबारी काव्य में सामाजिक परिवेश के चित्राण की ओर नगणय रूप में ध्यान दिया गया था। इसलिए भारतेंदु युग में नारी–शिक्षा विधवाओं की दुर्दशा ,अस्पृश्यता आदि को लेकर जो सहानुभूतिपूर्ण कविताएँ लिखी गई उनके प्रतिपाद्य की नवीनता ने रहस्य समुदाय को विशेष रूप से आकृष्ट किया।

भारतेंदु जी ने समाज की समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया। काव्य का सबंध रीति –काल से कवि के व्यक्तिगत जीवन के संकीर्ण क्षेत्रा से ही रह गया था। भारतेंदु ने व्यक्ति ओर समाज का फिर सबंध दृढ़ किया। भारतेंदु ने भारत– दुर्दशा नाटक में वर्णाश्रम धर्म की संकीर्णता का इन शब्दों में विरोध किया –बहुत हमने फैलाये ध्रम,बढ़ाया छुआछूत का कर्म।मन की लहर में प्रतापनारायण मिश्र की दृष्टि बाल–विधवओं की करूण दशा की ओर गया हैः कौन करे जो नहि कसकत सुनि बिपत्ति बालाबिधवन की अभिप्राय यह है कि समाजिक परिवेश के चित्रण में कुछ कवियों की दृष्टि सुधारवादी थी, तो कुछ प्रायः यथास्थितिवादी भी थे।

भक्ति भावना :– भारतेंन्दु–युग में परंपरागत धार्मिकता और भक्ति भावना को अपेक्षाकृत गौण स्थान प्राप्त हुआ है, फिर भी इस काल के भक्तिकाव्य को तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है–निर्गुण भक्ति वैष्णव भक्ति और स्वदेशानुराग – समन्वित ईश्वर भक्ति। इनमें से प्रथम दो में किसी उल्लेखनीय नवीनता का परियच न देकर मध्युगीन परिपाटी का अनुसरण मात्रा किया गया,किंतु भक्ति और देशप्रेम को एक ही समकोण पर प्रतिष्ठित करना किसी सीमा तक संवेदना की मौलिकता का परिचायक है। निर्गुण भक्ति इस काल की मुख्य साध्ना –दिशा नहीं थी। फलस्वरूप कुछ कवियों ने परंपरा के प्रभावस्वरूप संसार की नश्वरता माया–मोह की व्यर्थता सांझ सवेरे पंछी सब क्या कहते है कुछ तेरा हैं। हम सब इक दिन उड़ जाएगे , यह दिन चार बसेरा है।।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

**भारतेंदु हिरशचंद्र।**

**"साधे मनुवा अजब दिवाना**
**माया मोह जनम के ठगिया , तिनके रूप भुलाना।।"**

प्रतापनारायण मिश्र

श्रृंगारिकता :–भारतेंदु और उनके समकालीन कवियों ने रस को काव्य की आत्मा मानकर अपनी रचनाओं में विविध रसानुभूतियों का भावन किया है ,जिनमें श्रृंगार रस सर्वप्रमुख है। भारतेन्दु ने प्रेम सरोवर' 'प्रेम माधुरी' 'प्रेम तरंग' प्रेम फुलवारी ,आदि में भक्ति श्रृगांर और विशुद्ध श्रृंगार दोनों का समावेश किया है। प्रेमधन की युगलमंगल स्त्रोत्रा तथा वर्षा–बिंदु भी इसी प्रकार की रचनाएँ है।

भारतेन्दु के प्रेमदशा वर्णन संबंधी अनेक सवैया ने घनानंद जैसी सरसता विद्यमान है। उदाहरणः–

**"आज लौं न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।**
**मेरो उराहनौं है कुछ नाहिं सबै फ्रफल आपुने भाग को पावैं।।**
**जो हिरचंद भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।**
**प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावै।। "**

**प्रकृति – चित्राण :**

प्राकृतिक सौंदर्य का स्वच्छंद वर्णन भारतेन्दु युगीन कविता का अंगभुत विशेषता है , किंतु अधिकतर कवियों ने परंपरा–निर्वाह ही किया है। भारतेंदु जी ने कविता में नर प्रकृति का ही वर्णन करके उनके मनोविकारों को तीव्र यथा परिष्कृत करने का उद्योग किया। इन्होनें प्रकृति को सर्वश नहीं किया। मानव समाज के सीमित क्षेत्र में ही उसका अध्ययन किया। उनको प्रकृति के विस्तृत क्षेत्रा में ले जाने का प्रयास बहुत कम किया। भारतेंदु ने सत्य हरिश्चंद्र नाटक में गंगा –वर्णन और चंद्रवली नाटक में यमुना–वर्णन किया तो है ,किंतु अंलकार भार के कारण इनमें उनकी स्वत्रांत अनुभूति की क्षमता बहुत कुछ दब सी गई है।

भाषायी–चेतना– भारतेंदु युगीन काव्यादर्श में महत्वपूर्ण स्थान भाषा का है। उर्दू को प्राप्त शासकीय संरक्षण के संदर्भ में हिन्दी को उसका दाय दिलाने के लिए भारतेन्दु द्वारा विचरित हिन्दी भाषा केवल राजनीतिक कारणों से प्रेरित रचना नहीं थी , अपितु तत्कालीन साहित्यक भाषा में उर्दु फारसी की जटिल तत्सम

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पदावली का बहिष्कार भी इसी रचना की देन है। वो भारतेंदु उर्दू के एंकात विरोधी नहीं थे। फूलों का गुच्छा में उन्होने शब्दावली के प्रचुर प्रयोग किया है।

भाषा संरचना के दृष्टिकोण से यद्यपि इस युग के किसी भी कवि की ब्रजभाषा पद्याकर और घनानंद की काव्यभाषा के समान परिष्कृत नही ,किंतु इसके साथ ही अनेक रीतिकालीन कवियों की भांति भाषा को कला के लिए सिद्धांत के अनुरूप शब्दजाल का जामा पहनाना भी अभीष्ट नही रहा। भारतेन्दु का भाषा तथा साहित्य दोनों ही वस्तुओं पर परिवर्तनशील प्रभाव पड़ा।आदर्श परम्परा की स्थापना का श्रेय भारतेन्दु जी को ही प्राप्त है,इसी कारण यह युग – प्रर्वत्तक कहलाये।

## 3. निष्कर्षः

हिन्दी गद्य–साहित्य के विकास में भारतेंदु युग से गद्य–साहित्य का महत्व और महत्व भाषा के इतिहास में अतुलनीय है। इस काल में हिन्दी भाषी क्षेत्र में आधुनिक जीवन के प्रति जागरूकता का विकास हुआ। सामंती संस्कारों के अवशेषों को उस समय के मध्यवर्गीय सामाजिक परिवेश में विकसित हुए साहित्यिक कार्यों में किसी न किसी रूप में लक्षित किया जाना चाहिए। लगभग सभी गद्य विधाएँ, विशेष रूप से निबंध और नाटक, इस अवधि के दौरान पेश किए गए थेः – लेखकों ने इन दो विधाओं में असाधारण सफलता हासिल की है। भारतेंदु युग के दौरान पूरे देश में सांस्कृतिक जागृति की लहर दौड़ गई थी, जो उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के अनुरूप थी। सामंती सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई थी और अब अस्तित्व में नहीं थी। अंग्रेजी शिक्षा कितनी ही धीमी गति से विकसित हो रही थी और इसके उद्देश्य कितने ही सीमित थे, इसका राष्ट्रीय स्तर पर देश के शिक्षित समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा था। देश में एक मजबूत मध्यम वर्ग का निर्माण संभव था जो अधिक संवेदनशील हो। छात्रों के इस समूह ने व्यापक राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर विचार करना शुरू किया। यह महसूस करने के बाद कि हमारा देश सभी पहलुओं में बहुत खराब स्थिति में है, उन्होंने यह महसूस करना शुरू कर दिया कि स्थिति में सुधार के लिए सामाजिक और धार्मिक के साथ–साथ आर्थिक और राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है। भारतेन्दु अपने आप में इस प्रगतिशील चेतना के प्रतिनिधि थे।

हिन्दी भाषा और उसके साहित्य को आधुनिक काल में लाते हुए भारतेंदु ने भाषा और साहित्य को नई भावनाओं और विचारों की धाराओं से परिचित कराया। जीवन और साहित्य के बीच के अंतर को दूर करने के परिणामस्वरूप नई रुचियों और संवेदनाओं का विकास हुआ। इसी कारण उन्हें 'हिन्दी गद्य का जनक'

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कहा जाता है। वास्तव में भाषा की प्रकृति की कठिनाई का समाधान कर भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण सेवा की और हिन्दी साहित्य सदैव उनकी उपलब्धियों की सहायक नदी मानी जायेगी।

## 4. संदर्भ सूचीः


- चिन्तामणि : प्रो . कृष्णलाल एम . ए . पृ – 77
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ . नागेन्द्र पृ – 437
- कविवचनसुधा रू मई – 1879ः भारतेंदु हरिशचंद्र की विज्ञाप्ति।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ . नागेन्द्र , डॉ . हरदयाल पृ – 439
- चिन्तामणि – विवेचन :– प्रो . कृष्णलाल एम . ए . पृ – 79
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र पृ – 440
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र पृ – 440
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र , डॉ . हरदयाल पृ – 440 ऋ 441
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र पृ – 441
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र पृ – 441
- हिन्दी साहितय का इतिहासः डॉ . नागेन्द्र , डॉ . हरदयाल पृ 442
- हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ . नगेन्द्र पृ – 444
- चिन्तामणि – विवेचनः प्रो . कृष्णलाल पृ – 83
- हिन्दी साहितय का इतिहास : डॉ . नागेन्द्र पृ – 449.संदर्भ सूची